International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(2): 189-192

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(2): 189-192
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 06-01-2022
Accepted: 10-02-2022

डा. हेमन्तकुमार नेपाल
सहायक प्राध्यापक (साहित्य विभाग)
सरकारी संस्कृत महाविद्यालय
सामदोङ्ग, पूर्व सिक्किम, भारत

Corresponding Author:
डा. हेमन्तकुमार नेपाल
सहायक प्राध्यापक (साहित्य विभाग)
सरकारी संस्कृत महाविद्यालय
सामदोङ्ग, पूर्व सिक्किम, भारत

कालिदास की अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक और देवकोटा की शाकुन्तल महाकाव्य का पारिस्थितिक अध्ययन

डा. हेमन्तकुमार नेपाल

सारांशः-
परिवेष शब्द दोनों शब्द व्यवहार में समान अर्थबोध के लिए प्रयोग किया जाता हैं। इनका वातावरण के साथ ही विभिन्न अर्थ अभिव्यक्त होते हुए भी साधारण जनमानस को ज्ञात होने वाली साङ्केतिक अर्थ वातावरण ही हैं और अन्य अर्थ लाक्षणिक रूप में व्यक्त होते हैं। विमर्श या विमर्ष शब्द का भी एक ही अर्थ अभिव्यक्त होने से दोनों शब्द में अर्थगत रूप से कोही भिन्नता नही पाया जाता हैं। प्रत्यक्षरूप में इसने विचारविनिमय विषयवस्तु पर किये जानेवाले विवेचना वा विचार, अवलोकन समीक्षा, आलोचना आदि अर्थ बोध कराता हैं। इस तरह से देखने पर परिवेश विमर्श को वातावरण का आलोचना, समीक्षा वा प्रकृति का आलोचाना समीक्षा भी कहा जा सकता हैं। परिस्थिति शब्द में इक प्रत्यय लगाकर परिस्थितिक शब्द का निर्माण किया जाता हैं। इसका प्राज्ञिक अर्थ "समसामयिक वातावरण से सिर्जित हुए" होता है। इस में योजन किया गया इक प्रत्यय से स्थिति अर्थ का बोध होता हैं।इस लेख पर संस्कृत साहित्य के महाकवि कालिदास की अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक और नेपाली साहित्य के महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा की शाकुन्तल महाकाव्य का स्थूल रूप में तत्-तत् कालिन मानव एवं वातावरण वा प्रकृति विच का अन्तसम्बन्ध और अन्तर्सम्बन्ध फतिनिधि पद्यों द्वारा विवेचन करने की प्रयास किया गया हैं। संस्कृत साहित्य के महाकवि कालिदास की अभिज्ञानशआकुन्तलम् नाटक और नेपाली साहित्य के महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा की शाकुन्तल महाकाव्य में तत्-तत्कालिन मानिस और वातावरण वा प्रकृतिविच की अन्तसम्बन्ध एवं अन्तर्सम्बन्ध अभिव्यक्त हुआ है। दोनों साहित्य के महाकवियों ने दोनों साहित्य में मानिस को प्रकृति का अभिन्न अङ्ग के रूप में स्थापित करके प्रकृति ही मानव की सर्वस्व है इस विचार को व्यक्त किया। मानिस का प्रकृति प्रति का आदर्श प्रेम प्रस्तुत किया है। कृति में प्रयोग किए गए पात्रों का व्यवहार एवं मानसिकस्थिति घटना के स्वभाव अनुरूप प्रकृति का परस्पर सामाञ्जस्यता स्थापित किया है। दोनों कृति में प्रकृति एवं मानवीय प्रकृति के स्थूल मलिन, उग्र और शान्त आदि सब रूप चित्रित हैं। इन सब में प्रकृति प्रधान प्रधान होने से मानवीय जीवन प्रकृति में निर्भर हैं। प्रकृति अनुरूप मानवीय जीवन में विभिन्न स्थिति परिवर्तन होते हैं। अतः प्रकृति और मानिस पृथक न होकर मानिस प्रकृति का ही अंश है इस भाव अभिव्यक्त हुआ हैं। प्रकृति के ही अंश मानव हैं इस कथन को दोनों माहाकवियों की कृतियों ने चेतना प्रदान किया हैं।

कूट शब्दः- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक, विश् धातु धञ् प्रत्यय, सेवा कर्ना, भोजन परोसना, सूर्यविम्ब, चन्द्रविम्ब

परिचयः- विश् धातु धञ् प्रत्यय में परि उपसर्ग आगे लगाने पर परिवेश शब्द निर्माण होता हैं। इसका वैकल्पिक रूप परिवेष भी है। वामन शिवराम आप्टे परिवेश शब्द में पक्ष उपसर्ग दीर्घ होता हैं कहते है। इसका अर्थ भोजनके समय सेवा कर्ना, भोजन परोसना, सूर्यविम्ब, चन्द्रविम्ब, कोही वस्तु जो रक्षा करती है और घेर्ती है उसे परिधि कहते हैं।[1] कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य में लक्षतेस्म तदनन्तरं रविर्वद्धभीम परिवेषमंडलः कहा है।[2] नेपाल-प्रज्ञा प्रतिष्ठानद्वारा प्रकाशित नेपाली बृहत् शब्दकोश में इसका अर्थ चारौं तरफ से घेरा हुआ भएको, परिवेष्टन, सूर्य या चन्द्रमाके चारौ तरफ दिखने वाले एक प्रकारका मण्डल, सभा, परिधि, सीमा एवं वातावरण अर्थ किया गया हैं।[3] नरेन्द्र चापागाईंद्वारा सम्पादित नेपाली शब्दभण्डार में परिवेश एवं परिवेष दोनो शब्द का अर्थ प्रकाशित् पार्नेका प्रयास किया हैं। उक्त कोश में परिवेश शब्दका अर्थ वातावरण, परिस्थिति, आरेख, सीमा किया है एवं परिवेष शब्दका अर्थ स्पर्शन क्रिया, आरेख, परिधि, वेष्टन, सूर्य तथा चन्द्र आदि के चारौं ओर फैला हुआ मण्डल, चारौ ओर उठाया हुवा दिवाल किया है।[4] उक्त शब्दकोशौं में संस्कृत हिन्दी कोश और नेपाली बृहत् शब्दकोश में परिवेश एवम् परिवेष दोनों शब्द को समानार्थी माना गया है। नेपाली शब्दभण्डार में दोनों को पृथक् परिभाषित कर्ने की प्रयास किया है लेकिन अर्थगत् स्पष्ट अन्तर नही कर सके है। व्याकरण के आधार में भी दोनों शब्द वैकल्पिक रूप होने के कारण ये समानार्थी है।

[1] आप्टे, वामन शिवराम, सन् २००२, संस्कृत हिन्दी कोश, जयपुर : रचना प्रकाशन, पृ. ५९०
[2] शास्त्री, वेदप्रकाश (सम्पा.) सन् २०१५, रघुवंशम्, वारणासी : चौखमेबा विद्याभवन, सर्ग ११, श्लोक ५९
[3] पराजुली, कृष्णप्रसाद (सम्पा.) सन् २००७, नेपाली बृहत् शब्दकोश (नवौं सं.) काठमाडौं : नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, पृ. ७४६
[4] चापागाई, नरेन्द्र (सम्पा.) सन् सन् २००६, नेपाली शब्दभण्डार, विराटनगर : श्याम पुस्तक भण्डार, पृ. ६९३

इसी को वातावरण शब्दका पर्यायवाचि के रूप में प्रयोग किया है। अतः कोशीय अर्थ भी वातवरण ही है। इसिलिए परिवेश शब्द का मतलब चारों ओर फैला हुआ वातावरण होता है।

मृश् धातु में वि उपसर्ग आगे लगाकर घञ् प्रत्यय लगा देने से विमर्श शब्द निर्माण होता है। इसी तरह मृष् धातु में वि उपसर्ग आगे लगाकर घञ् प्रत्यय लगाकर विमर्ष शब्द निर्माण किया जाता है। विमर्श का अर्थ विचार, विनिमय, सोच, विचार परिक्षण, चर्चा, तर्कना, विपरीत निर्णय, संकोच, सन्देह एवं विगत के शभाशुभ कर्म के मन में रहेहुए अमिट छाप अर्थ किया जाता हैं। इसी तरह ही विमर्ष शब्द का विचार, विचारविनिमय, अधीरता, असहिष्णुता, असन्तोष, अप्रसन्नता आदि अर्थ करके अन्त्य में सब अर्थ के लिए व्यवहार में विमर्श शब्द का प्रयोग किया जाता हैं। साहित्यदर्पण में नाटकीय कथावस्तु का सफल प्रगति में परिवर्तन, किसी प्रेमाख्यान का सफल उपक्रम में किसी अदृष्ट दुर्घटना के कारण परिवर्तन अर्थ को परिभाषित किया हैं।[5] नेपाली बृहद् शब्दकोश में विमर्श एवं विमर्ष दोनों शब्द का अर्थ स्पष्ट किया हैं। दोनों शब्द का समान रूप से वास्तविक तथ्यों की अन्वेषण, सत्य की खोज, विषयवस्तु के बारे किये जाने वाले विवेचना वा विचार, अवलोकन समीक्षा, आलोचना आदि अर्थ किया हैं।[6] इसी तरह नेपाली शब्दभण्डार में भी दोनों शब्द की छलफल, तर्कवितर्क, विवेचना, परामर्ष, विचारविमर्श, सरसल्लाह आदि अर्थ किया हैं।[7] उक्त विवेचना के आधार पर परिवेश एवम् परिवेष शब्द दोनों शब्द व्यवहार में समान अर्थबोध के लिए प्रयोग किया जाता हैं। इनका वातावरण के साथ ही विभिन्न अर्थ अभिव्यक्त होते हुए भी साधारण जनमानस को ज्ञात होने वाली साङ्केतिक अर्थ वातावरण ही हैं और अन्य अर्थ लाक्षणिक रूप में व्यक्त होते हैं। विमर्श या विमर्ष शब्द का भी एक ही अर्थ अभिव्यक्त होने से दोनों शब्द में अर्थगत रूप से कोही भिन्नता नही पाया जाता हैं। प्रत्यक्षरूप में इसने विचारविनिमय विषयवस्तु पर किये जानेवाले विवेचना वा विचार, अवलोकन समीक्षा, आलोचना आदि अर्थ बोध कराता हैं। इस तरह से देखने पर परिवेश विमर्श को वातावरण का आलोचना, समीक्षा वा प्रकृति का आलोचाना समीक्षा भी कहा जा सकता हैं। साहित्यालोचना के रूप में आये हुए परिवेश विमर्श विसुद्ध प्रकृति वा वातावरण का आलोचना समीक्षा आदि न होकर सिर्जनात्मक साहित्य में अभिव्यक्त किएहुए वातावरण वा परिवेश की आलोचना हैं। इससे साहित्य के अन्दर अभिव्यक्त हुए केवल एकल वा विशुद्ध प्रकृति का अध्ययन नही होकर मानव एवं प्रकृति की सम्बन्ध का अध्ययन हता हैं। भारतीय दर्शन अनुसार सूक्ष्म प्रकृति से स्थूल प्रकृति का सृजना होता हैं। सुक्ष्म प्रकृति हरेक सृजना का बीज है और ये नित्य एवं परमाणु रूपात्मक है। न्याय दर्शनानुसार सात पदार्थ होते हैं वें द्रब्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समावाय और अभाव हैं। सात पदार्थवों में द्रब्य प्रमुख पदार्थ है। द्रब्य के पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, काल, दिग्, आत्मा और मन नौं प्रकार के भेद हैं । ये एक-और में परिपूरक हैं। नौं प्रकार के द्रब्यों में पृथ्वी प्रमुख द्रब्य है। पृथ्वी नित्य और अनित्य दो प्रकार के होते हैं। नित्य परमाणु वा बीजरूप में रहते है अनित्य पृथ्वी कार्यरूप है। इसी को भौतिक प्रकृति कहा जाता है। परिवेश विमर्श साहित्य में निस्यूत मानव और भौतिक प्रकृति की अन्तर्सम्बन्ध को अध्ययन करता है। प्रस्तुत लेख में कालिदास की अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक और देवकोटा की शाकुन्तल माहाकाव्य में चित्रित मानव एवं प्रकृति की अन्तर्सम्बन्ध का अध्ययन किया है।

विषय प्रवेशः- परिस्थिति शब्द में इक प्रत्यय लगाकर परिस्थितिक शब्द का निर्माण किया जाता हैं। इसका प्राज्ञिक अर्थ "समसामयिक वातावरण से सिर्जित हुए" होता है। इस में योजन किया गया इक प्रत्यय से स्थिति अर्थ का बोध होता हैं। इस तरह से परिस्थितिक शब्द का अर्थ समसामयिक वातावरण से सिर्जित हुए स्थिति होता है। इस तरह से विवेचन करने पर परिस्थितिक अध्ययन में साहित्यिक कृतियौं में अभिव्यक्त हुए तत्कालिन समय के मानव एवं प्रकृति विच का अन्तसम्बन्ध या अन्तर्सम्बन्ध का अध्ययन किया जाता हैं। अतः इस लेख पर संस्कृत साहित्य के महाकवि कालिदास की अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक और नेपाली साहित्य के महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा की शाकुन्तल महाकाव्य का स्थूल रूप में तत्-तत् कालिन मानव एवं वातावरण वा प्रकृति विच का अन्तसम्बन्ध और अन्तर्सम्बन्ध फतिनिधि पद्यों द्वारा विवेचन करने की प्रयास किया गया हैं। दोनों साहित्यों के महाकवियों ने दोनों साहित्यों में मानव को प्रकृति का अभिन्न अंग के रूप में स्थापित करके प्रकृति मानिस का सर्वस्व है इस तरह की विचार व्यक्त किया हैं। मानिस का प्रकृति के प्रति आदर्श प्रेम प्रस्तुत किया हैं। कृति में प्रयोग किए गए पात्रों का व्यवहार, मानसिक स्थिति, घटना, विचार एवं स्वभाव से प्रकृति का परस्पर सामान्जस्यता स्थापित किया हैं। संस्कृत साहित्य के महाकवि कालिदास नें अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के मङ्गलाचरण मे ही आठ प्रकार के तनु शरीरौं को प्रकृति के अंश के रूप में चित्रण करके ये आठ प्रकार के तनुऔं में समष्टिरूप चराचर जगत् प्रकृति का चित्रण किया हैं। व्यष्टिरूप में सब चर एवं अचर प्राणीयों का चित्रण किया हैं। समष्टि प्रकृति अभेद एवं नित्य प्रकृति है इसी से सम्पूर्ण जीवों का जन्म एवं पालन होता हैं। इसी में जगत् व्यस्त है। इस तरह का भाव अभिव्यक्त करके प्रकृति का सजिवता की चित्रण किया है। नेपाली साहित्य के महाकवि देवकोटा नें शाकुन्तल महाकाव्य के मङ्गलाचरण में प्रकृति की मनोरम एवं कोमल रूप की चित्रण किया हैं। दोनों कवियों के साहित्यिक कृतियों में प्रकृति प्रति का आदर्श भाव व्यक्त होते हुए भी प्रकृति की शान्त, कोमल और उग्र तीन प्रकार के रूपों को प्रस्तुत किया हैं।

पारिस्थितिक अध्ययनः- संस्कृत साहित्य के महाकवि कालिदास नें अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की मङ्गल पद्य में आठ प्रकार के तनुओं से सृजित इस विश्व का शाब्दिक चित्र इस प्रकार से व्यक्त किया हैं –

या सृष्टि स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता वाप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभिः पसन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरिष्टाभिरिशः।।[8]

अर्थात् जो जगत् स्रष्टा की पहली मूर्ति (तनु) है इसको जल रुपी सृष्टि कहा जाता है। जो मूर्ति विधिवत् किए गए हवन सामग्री को तत्-तत् देवता समक्ष पहुँचाता है उसे अग्नी कहा जाता है। जो मूर्ति यजमान रुप में वैदिक विधान को सम्पादन करता है उसे तिस्रा तनु कहा जाता है। जो मूर्ति पक्ष, मास, ऋतु आदिद्वारा काल का विधान करता है वो सूर्य एवं चन्द्र हैं। वो मूर्ती कर्णेन्द्रिय का विषय और शब्द का आश्रय से आकाश के रूप में सर्वत्र व्याप्त है। वो मूर्ती जिस को विद्वान सम्पूर्ण बीज का उत्पादक, कारण और पृथिवी के रूप में प्रतिपादित करते हैं एवं जो मूर्ती प्राणीओं को जीवन देती है को वायु है। वायु रूपी मूर्ति सम्पूर्ण प्राणीओं को जीवन देती है। ये सब प्रत्यक्ष दृश्यमान भगवान् शिव के व्याप्त अष्टमूर्तीओं ने सब की रक्षा करें।

इस पद्य में कालिदास ने प्रकृति की जल, अग्नी, कर्ताशक्ति, काल, शब्द पृथिवी और वायु आठ प्रकार के शक्तिओं को प्रकाशित किया हैं। इन्हों से सम्पूर्ण परिवेश का सृजना होता हैं। ये एकत्व रूप में रहकर जगत की सृजना करते हैं। ये ही जन-जीवन की रक्षा करते हैं। इस आधार से प्रस्तुत पद्य की विवेचना करने पर कालिदास ने प्रकृति को मानव से उपर रखकर अध्ययन किया हैं। प्रकृति को जल के रूप में शीतल, अग्नी के रूप में गरम (उग्र), कार्यशक्ति के रूप में गुणवान् (सत्व, रज र तम), सूर्य और चन्द्र के रूप में उग्र एवम् मलीन दोनों, शब्द के रूप में व्यापक, पृथिवी के रूप में उत्पादक एवं सृजनाशील एवं वायू के रूप में जीवन दाता के रूप में विवेचना किया हैं। इस तरह पृथिवी को प्रकृति का सर्वव्यापी एवं सर्वगुणी रूप का चर्चा करके कालिदास ने इस पद्य में प्रकृति का आदर्शभाव अभिव्यक्त किया है।

नेपाली साहित्य के महाकवी लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा ने शाकुन्तल महाकाव्य की मङ्गलाचरण में प्रकृती की कोमल रूप की अभिव्यक्ति के साथ सम्पूर्ण महाकाव्य का सार प्रस्तुत किया हैं-

चिम्ली लोचन दीर्घकाल तपमाखोलेर वासन्तिका।
नाच्दी सुन्दर तालले पवनमा देखी फुलेकी लता।।

[5] विश्वनाथ, सन् २०००, सहित्यदर्पणः (दसौं सं.) वाराणसी : चौखम्बा विद्याभवन, पृ. ३३६

[6] पराजुली, कृष्णप्रसाद (सम्पा.) सन् २००७, पूर्ववत्, पृ. ११५८

[7] चापागाई, नरेन्द्र (सम्पा.) सन् सन् २००६, पूर्ववत्, पृ. १०९९

[8] शास्त्री, वेदप्रकाश (सम्पा.) सन् २०१५, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, वारणासी : चौखमेबा विद्याभवन, पृ.१

बिर्से झैं भन को तिमी यति भनी गौरी रुलाईकन।
मुस्काएर फुल्याउँदा शिव दिऊन कल्याणको चुम्बन।।[9]

जो दीर्घ काल से लोचन बन्द करके स्व गुण की उद्रेक अवस्था में रहे थे। उन्हों ने आँख खोलने पर चारों ओर वशन्त का रमझम देखा। उस समय खिले हुए पुष्प लता जैसे पवन बहती वैसे नाच रहे थें। तब शिवसंकर भगवान नें गौरी को भुलने का जैसा नक्कल किया। गौरी ने इस झुटी छलको सच समझा और वो रुठ गई और रोने लगी। तब गौरी को मनाने के बहाने शंकर ने उन को कोमल चुम्बन किया। उसी कोमल चुम्बन की तरह शंकर की कोमल कृपा सम्पूर्ण जीवको कल्याण करें।

उक्त पद्य में प्रकृति की कोमल रूप को व्यक्त करते हुए देवकोटा ने शाकुन्तल महाकाव्यका समग्र सार चित्रण किया है। इस पद्य से सांकेतिक अर्थ इतर लक्षणिक और व्यंग्य अर्थ भी अभिव्यक्त होता है। व्यंग्यार्थ द्वारा हि समग्र सारार्थ व्यक्त होता है। इस पद्य में वासन्तिका, फुलेकी लता, रुलाईकन एवं कल्याणको चुम्बन कोमल प्रतीकात्मक पदें प्रयोग किया गया है। इन्हीं पदों की प्रभाव से पाठकों के हृदय में प्रकृति की सौन्दर्य रूप प्रति की मोह अभिव्यक्त हुवा हैं। अतः इस पद्य में प्रकृति की कोमल एवं संवेदशील रूप के प्रस्तुत के साथ सम्पूर्ण शाकुन्तल महाकाव्य का सार अभिव्यक्त हुआ हैं। इस पद्य में देवकोटा की प्रकृति प्रति की आदर्श भाव अभिव्यक्त होती है।

इसी तरह प्रकृति की उग्र रूप की वर्णन कालिदास ने दुर्वाशा द्वारा शापित शकुनतला की भविष्य की संकेत स्वरूप वर्णन के प्रसङ्ग में ऐसे व्यक्त किया हैं-

यात्येकतोस्तशिखरं पतिरोषधीनामाविष्कृतोरुणपुरःसर एकतोर्कः।
तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवैष दशान्तरेषु।।[10]

एक ओर चन्द्रमा के उदय हो रहा है और दुसरी ओर अरूणोदय हो रहा है। एक ही समय दो प्रकार के तेजों के उदय और अस्तय से विश्व में कोही भी स्थिति समान नही होते हैं। ये लोक का नियम ही हैं। इस तरह की अभिव्यक्ति द्वारा कालिदास ने वस्तु की अवस्था और अनित्यता ईश्वरीय वा प्राकृतिक नियम की सत्यता व्यक्त किया है। प्रस्तुत पद्य में दोनों प्रकार के तेज का एक ही समय उदय होना प्रकृति की उग्ररूप की चित्रण है। संसार में कोही भी स्थिति समान ना होने का भाव व्यक्त करना प्राकृतिक पदार्थों की अनित्यता दर्शाना हैं। परस्पर विरोधी तेजों की एक ही साथ उदय को दिखाना शकुन्तला को पुत्र रत्न प्राप्त होना और दुष्यन्त के साथ विछोड होनेका संकेत व्यक्त करना है। इस पद्य में शकुनतला की जिवनस्थिति से प्रकृति की सामाञ्जस्यता स्थापित किया हैं।

इसी तरह देवकोटा ने मदनविह्वल शकुन्तला की स्थिति की चित्र इस तरह खिचा है-

वसन्त अलि मारको नव प्रसादको तापले।
सुकाउँदछ ओठ नै कुसुमका मिहि रापले।।
नबोल्न सकिने कुरा हृदयमा बसी भस्भस।
जलेर रँगका शिखाहरू जले दिशामा दश।।[11]

मन प्रफुल्लित होते हुए भी वशन्त ऋतु के आए हुए शकुन्तला का नवयौवन एवं नव वशन्त ऋतु की आगमन की सन्ताप से चारों ओर फुले हुए कुशुम और लता समूह की कोमलता होठ को सुखा रही है वा यौवन व्याकुल बना हरी है। अभिव्यक्त करने के लिए असमर्थ मानसिक भाव मन में व्यक्त रहे हैं। इस भ्रम के कारण सम्पूर्ण शरील जलते हुए प्रतीत होता है और दश दिशा जले हुए प्रतीत होत है।

प्रस्तुत पद्य में वशन्त ऋतुको का चित्रण किया है। वशन्त का समय स्वभाव से मनोरञ्जनानुकूल होने से मानव की चित्वृत्ति भी मोहात्मक होती है। प्रकृति मनोरञ्जनानुकूल होने पर इन में सभी प्रकार के रूप समाए जाते हैं। उक्त पद्य में मोहात्मक वशन्त में भी तपन और तापन शक्ति है इस भाव को अभिव्यक्त किया है। इसि तरह शाकुनतला की दुश्यन्त प्रति की वासनात्मक अनुराग व्यक्त किया गया है। वब्यसनानुकूल प्रकृति की उग्र चित्रण ने चरित्र की चित्तदशा से साक्षात्समबन्ध स्थापित किया है।

स्थिति अनुकूल प्रकृति की वर्णन कालिदास ने इस तरह व्यक्त किया है-

सङ्कल्पितं प्रथममेव मया त्वदर्थं
भर्त्तारमात्मसदृशं स्वगुणैर्गतासि।
अस्यास्तु सम्प्रति वरं त्यि वीतचिन्तः
कान्तं समीपसहकारमिमंकरिष्ये।।[12]

हे पुत्री तुमारी किसी योग्य वर के साथ विवाह कराने की मेरा सङकल्प था पर तुमने खुद अपनी गुणअनुरूप वर प्राप्त किया। अतः मैं निश्चिन्त हुँ। अब इस माधवीलता की भी समिप के मनोहर आम्ररूपी वर के साथ विवाह करा दुंगा।

उक्त पद्य में शकुनतला और माधवीलता की समान यौवन काल का तुलना किया है। इसी तरह आम्रवृक्ष और दुष्यनत का भी पूर्ण वयस्क यौवन का सांकेतिक तुलना किया है। लाक्षणिक रूप में माधवीलता और आम्र पल्लव की संकेत से विवाहयोग्य वसन्तकाल की प्रतिति होती है। अतः यहाँ मानवीय स्थिति अनुकूल प्रकृति का वर्णन पाया जाता है।

इसी तरह देवकोटा ने तेइसवीं सर्ग में दुष्यन्त का प्रताप का प्रकृति के साथ सामाञ्जस्यता देखाया है-

गर्मी चढ्दै गयो झन् क्षणभर सुर ती रापले ताप पारी।
गर्माएका हुँदामा हँसमुख अब छन् भूप दुष्यन्त भारी।।
मेरो यो अस्त्र यौटा हृदनल कहिने एक यो हो बिजूली
मेघारूढा भवानीसँग वर पहिले पाइएको खुसीमा।।[13]

जितनी गर्मी चडती गई वो वीर दुष्यन्त वीरता की राप से लाल होते गए पर भी इनका चहेरा हसमुख है। अत वो कहते है मेरा ये अस्त्र हृदयके क्रोधाग्नि से विजुली की तरह चमक रही है क्यूँ की मैने पहले ही भवानी से वरदान प्राप्त किया है वो आज फलीभूत हो रही है। मैं सत्रू संहार करने मे समर्थ हुँ।

प्रस्तुत पद्य में गर्मी की मौसम में स्वभाव से ही मानिसक की मानसिक एवं शरीरिक स्थिति गरम होती है। दुष्यन्त की शारीरिक स्थिति गरम होते हुए भी प्रसन्न मुद्रा में है। अतः वो धीर एवं उदात्त है। गृष्म ऋतु की घाम के समान जब दुष्यनत की हृदयानल जलती है तब उन की अस्त्र बिजुली समान चमकती है। इस वरदान को उन्हों ने इन्द्र से पाया है। इस प्रकार का भाव प्रस्तुत पद्य से व्यक्त होते हुए भी लाक्षणिक रूप से अभेदारोप द्वारा दुष्यन्त का उग्र प्राकृतिक स्वरूप से तुलना किया है।

निष्कर्षः- परिस्थिति विमर्श से साहित्य में निस्यूत मानव और भौतिक प्रकृति की अन्तर्सम्बन्ध का अध्ययन करता है। परिस्थिति शब्द में इक प्रत्यय लगाकर परिस्थितिक शब्द का निर्माण किया जाता है। इसकी प्राज्ञिक अर्थ समसामयिक वातावरण से सिर्जना किया गया होता है। इस में योजन किया गया इक प्रत्यय से स्थिति अर्थ बोध होती है। अतः परिस्थितिक शब्द की अर्थ समसामयिक वातावरण से सिर्जना किया गया स्थिति होता है। इस तरह से विवेचन करने पर परिस्थितिक अध्ययन में साहित्यिक कृतियों में अभिव्यक्त तत्कालिन समय की मानिस और प्रकृति विच का अन्तसम्बन्ध या अन्तर्सम्बन्ध का अध्ययन करना होता हैं। संस्कृत साहित्य के महाकवि कालिदास की अभिज्ञानशआकुन्तलम् नाटक और नेपाली साहित्य के महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा की शाकुन्तल महाकाव्य में तत्-तत्कालिन मानिस और वातावरण वा प्रकृतिविच की अन्तसम्बन्ध एवं अन्तर्सम्बन्ध अभिव्यक्त हुआ है। दोनों साहित्य के महाकवियों ने दोनों साहित्य में मानिस को प्रकृति का अभिन्न अङ्ग के रूप में स्थापित करके प्रकृति ही मानव की सर्वस्व है इस विचार को व्यक्त किया। मानिस का प्रकृति प्रति का आदर्श प्रेम प्रस्तुत किया है। कृति में प्रयोग किए गए पात्रों का व्यवहार एवं मानसिकस्थिति घटना के स्वभाव

[9] देवकोटा, लक्ष्मीप्रसाद, सन् २०१०, शाकुन्तल (नवौं सं) ललितपुर : साझा प्रकाशन, पृ. १
[10] शास्त्री, वेदप्रकाश (सम्पा.) सन् २०१५, पूर्ववत्, पृ. १८५
[11] देवकोटा, लक्ष्मीप्रसाद, सन् २०१०, पूर्ववत्, पृ. १९२
[12] शास्त्री, वेदप्रकाश (सम्पा.) सन् २०१५, पूर्ववत्, पृ. २०१२
[13] देवकोटा, लक्ष्मीप्रसाद, सन् २०१०, पूर्ववत्, पृ. ३२३

अनुरूप प्रकृति का परस्पर सामाञ्जस्यता स्थापित किया है। दोनों कृति में प्रकृति एवं मानवीय प्रकृति के स्थूल मलिन ,उग्र और शान्त आदि सब रूप चित्रित हैं। इन सब में प्रकृति प्रधान प्रधान होने से मानवीय जीवन प्रकृति में निर्भर हैं। प्रकृति अनुरूप मानवीय जीवन में विभिन्न स्थिति परिवर्तन होते हैं। अतः प्रकृति और मानिस पृथक न होकर मानिस प्रकृति का ही अंश है इस भाव अभिव्यक्त हुआ हैं। प्रकृति के ही अंश मानव हैं इस कथन को दोनों माहाकवियों की कृतियों ने चेतना प्रदान किया हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1. आप्टे, वामन शिवराम, सन् २००२, संस्कृत हिन्दी कोश, जयपुर : रचना प्रकाशन
2. चापागाई, नरेन्द्र (सम्पा.) सन् सन् २००६, नेपाली शब्दभण्डार, विराटनगर : श्याम पुस्तक भण्डार
3. देवकोटा, लक्ष्मीप्रसाद, सन् २०१०, शाकुन्तल (नवौं सं) ललितपुर : साझा प्रकाशन
4. पराजुली, कृष्णप्रसाद (सम्पा.) सन् २००७, नेपाली बृहत् शब्दकोश (नवौं सं.) काठमाडौं : नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान
5. विश्वनाथ, सन् २०००, सहित्यदर्पणः (दसौं सं.) वाराणसी : चौखम्बा विद्याभवन
6. शास्त्री, वेदप्रकाश (सम्पा.) सन् २०१५, रघुवंशम्, वारणासी : चौखम्बा विद्याभवन
7. शास्त्री, वेदप्रकाश (सम्पा.) सन् २०१५, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, वारणासी : चौखम्बा विद्याभवन